''संस्कार जागृति मिशन'' को समर्पित

!! ओ३म् !!

अंक-01 वर्ष-02, अप्रैल 2020 (मासिक)

एक कदम संस्कारों की ओर

संस्कार जागृति

मासिक डिजीटल (ऑन लाइन) पत्रिका

नर सेवा ही नारायण सेवा है

कोविड-19 (कोरोना) वायरस

बचाव ही उचित उपचार है

स्वयं की एवं दूसरों की रक्षा करें।

संस्कार जागृति

''संस्काराद् द्विज उच्यते''

(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

(भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रही संस्था 'संस्कार जागृति मिशन' को समर्पित डिजीटल पत्रिका)

अंक-01 वर्ष-02, संवत्सर 2077 अप्रैल 2020 (मासिक)

मार्गदर्शक
आचार्य सत्यप्रिय आर्य
डा0 अर्चना प्रिय आर्य

संपादक
विवेक प्रिय आर्य

सृष्टि संवत्
1960853121

कार्यालय
संस्कार जागृति मिशन
52, ताराधाम कॉलोनी
नियर पुष्पांजलि द्वारिका
टाउनशिप (मथुरा) उ.प्र.

दूरभाष
09719910557
09719601088
09058860992

अनुक्रमणिका

लेख-कविता — पृष्ठ संख्या

वेदवाणी.......03
सम्पादकीय.......04
संस्कारों की विज्ञान सम्मत प्रक्रिया.......05
कवि की कलम से.......06
मेरे दो साल-आचार्य प्रेमभिक्षु के साथ.......07-09
कठिन परिस्थितियों में रोना नहीं चाहिए.......10
स्वास्थ्य चर्चा.......11
संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां.......12-15
विज्ञापन.......16

'संस्कार जागृति' पत्रिका प्राप्त करने के लिए

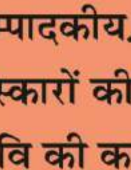

अपनी ई-मेल आईडी व व्हाट्सएप नम्बर हमें भेजें........09719910557

वेद वाणी

मन की अपार शक्ति को चैतन्य कर

वेद मंत्र

ओ३म् आ त्वा रम्भं न जिव्रयो ररम्भा शवसस्पते। उश्मसि त्वा सधस्थ आ।।

-ऋ० ८।४५।२०

ऋषिः-**त्रिशोकः काण्वः**।। देवता-**इन्द्रः**।। छन्दः-**गायत्री**।।

विनय

हे भगवन्! मैं बुड्ढा हूं और तुम मेरी लाठी हो। तुम मेरे सहारे हो। मेरा इस जन्म का यह देह चाहे वृद्ध न दीखता हो, परन्तु मैं सच्चे अर्थ में जीर्ण हूं, पुराना हूं, अतएव अनुभवी हूं। मैं न जाने कितनी योनियों में फिरा हूं-सब संसार भोग चुका हूं, परन्तु अब मैं तुम्हें 'शवसस्पते' करके सम्बोधन करता हूं, क्योंकि मैंने सुदीर्घ अनुभव से जान लिया है कि सब बलों के स्वामी तुम्हीं हो। मैंने कभी बड़ा धनाढ्य होकर धनबल का अभिमान किया है, किसी समय यह समझा है कि मेरे साथ इतना बड़ा दल है, अतः जो मैं चाहूं कर सकता हूं, इस प्रकार दलबन्दी के बल को भी आजमाया है, कभी अपने बुद्धि-बल, चतुराई-बल के मुकाबले में सब संसार को तुच्छ समझा है। शरीर-बलों और शस्त्र-बलों का तो कहना ही क्या है! पर इतने लम्बे, अनगिनत योनियों के सुदीर्घ अनुभवों के बाद जीर्ण होकर-पुराना होकर अब समझा है कि सब बलों के स्वामी तो तुम हो। इसलिए अब और सब बलों का सहारा छोड़कर एक तुम्हारा सहारा पकड़ लिया है। हे मेरे एकमात्र बल! तुम मुझसे अब क्षणभर के लिए भी दूर मत होओ। अब यदि मैं क्षणभर के लिए भी तुमको भूल जाता हूं-अपने मानसिक विचार-नेत्र के सामने से क्षणभर के लिए भी तुम्हें ओझल पाता हूं, तो मैं व्याकुल हो जाता हूं-एकदम निस्सहाय हो जाता हूं, अतः अब तो सतत यही कामना है कि तुम सदा ही मेरे सामने और मेरे साथ ही बने रहो। बुड्ढे की लाठी जब आंखों के सामने पड़ी हो, पर उसकी पहुंच के परे पड़ी हो, तब तो उसका सहारा न पा सकते हुए उसका दीखना बुड्ढे के लिए और भी दुःखदायक हो जाता है। इसलिए हे मुझ वृद्ध की लाठी! हे मुझ निर्बल के बल! हे मेरे एकमात्र सहारे! तुम अब सदा मेरे साथ रहो-सधस्थ बने रहो। तुमसे तनिक भी दूर होकर अब मैं नहीं रह सकता।

शब्दार्थ

शवसः पते- हे सब बलों के स्वामिन्! **जिव्रयः**- बुड्ढा पुरूष **रम्भं न**- जैसे डण्डे को **त्वा**- उस प्रकार तेरा मैंने **ररम्भ**- अवलम्बन कर लिया है और अब मैं **त्वा**- तुझे **सधस्थे**- अपने समान स्थान में **आ**- आमने-सामने--आंखों के सामने **उश्मसि**- चाहता हूं-देखना चाहता हूं।

('आचार्य अभयदेव जी' की पुस्तक 'वैदिक विनय' से)

आपके विचार व सुझाव आमंत्रित हैं

प्रिय साथियों आप भी अपने सुझाव या विचार हमें भेज सकते हैं, जिन्हें अगले अंक में प्रकाशित कर सकें। E-Mail : sanskarjagratimission@gmail.com 09719910557

सम्पादकीय

" नर सेवा ही नारायण सेवा है "

विवेक प्रिय आर्य
(सम्पादक)

मानव सेवा ही ईश्वर की सच्ची पूजा होती है। अगर अपने से कमजोर, दीन-हीन, असहाय, अभावग्रस्त, आश्रित, वृद्ध, विकलांग, जरूरतमंद व्यक्ति की सेवा और सहायता न की जाए, तो समाज भला कैसे उन्नति करेगा? सच तो यह है कि सेवा ही असल में मानव जीवन का सौंदर्य और श्रृंगार है। नर सेवा न केवल मानव जीवन की शोभा है, अपितु यह भगवान की सच्ची पूजा भी है। दूसरों की सेवा से हमें पुण्य का तो पता नही मिलता है या नही- पर इससे संतोष और असीम शांति अवश्य प्राप्त होती है। एक दृष्टांत के माध्यम से समझते हैं-

एक समय मोची का काम करने वाले व्यक्ति को रात में भगवान ने सपना दिया और कहा - कल सुबह मैं तुझसे मिलने तेरी दुकान पर आऊंगा! मोची की दुकान काफी छोटी थी और उसकी आमदनी भी काफी सीमित थी। खाना खाने के बर्तन भी थोड़े से थे। इसके बावजूद वो अपनी जिंदगी से खुश रहता था। एक सच्चा, ईमानदार और परोपकार करने वाला इंसान था। इसलिए ईश्वर ने उसकी परीक्षा लेने का निर्णय लिया। मोची मे सुबह उठते ही तैयारी शुरू कर दी। भगवान को चाय पिलाने के लिए दूध, चायपत्ती और नाश्ते के लिए मिठाई ले आया। दुकान को साफ कर वह भगवान का इंतजार करने लगा। उस दिन सुबह से भारी बारिश हो रही थी। थोड़ी देर में उसने देखा कि एक सफाई करने वाली बारिश के पानी में भीगकर ठिठुर रही है। मोची को उसके ऊपर बड़ी दया आई और भगवान के लिए लाए गये दूध से उसको चाय बनाकर पिलाई। दिन गुजरने लगा, दोपहर बारह बजे एक महिला बच्चे को लेकर आई और कहा - मेरा बच्चा भूखा है इसलिए पीने के लिए दूध चाहिए। मोची ने सारा दूध उस बच्चे को पीने के लिए दे दिया। इस तरह से शाम के चार बज गए। मोची दिनभर बड़ी बेसब्री से भगवान का इंतजार करता रहा। तभी एक बूढ़ा आदमी जो चलने से लाचार था आया और कहा - मै भूखा हूं और अगर कुछ खाने को मिल जाए तो बड़ी मेहरबानी होगी। मोची ने उसकी बेबसी को समझते हुए मिठाई उसको दे दी। इस तरह से दिन बीत गया और रात हो गई। रात होते ही मोची के सब्र का बांध टूट गया और वह भगवान को उलाहना देते हुए बोला- वाह रे भगवान ! सुबह से रात कर दी मैंने तेरे इंतजार में लेकिन तू वादा करने के बाद भी नहीं आया। क्या मैं गरीब ही तुझे बेवकूफ बनाने के लिए मिला था। तभी भगवान ने कहा- मैं आज तेरे पास एक बार नहीं, तीन बार आया और तीनों बार तेरी सेवाओं से बहुत खुश हुआ और तू मेरी परीक्षा में भी पास हुआ है, क्योंकि तेरे मन में परोपकार और त्याग का भाव सामान्य मानव की सीमाओं से परे हैं।

किसी भी मजबूर या ऐसा व्यक्ति जिसको आपकी मदद की जरूरत है उसकी मदद जरूर करना चाहिए। क्योंकि शास्त्रों में कहा गया है कि ''नर सेवा ही नारायण सेवा है'' मदद की उम्मीद रखने वाले, जरूरतमंद और लाचार लोग धरती पर भगवान की तरह होते हैं जिनकी सेवा से सुकून के साथ एक अलग संतुष्टी का एहसास होता है।

गतांक से आगे...

''संस्कारों की विज्ञान सम्मत प्रक्रिया''

लेखिका : डा. अर्चना प्रिय आर्य, अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

डा० अर्चना प्रिय आर्य
एम.ए. (संस्कृत/हिंदी)
बी.एड., पीएच.डी.

.....कर्म संस्कार या कर्म वासना शब्द का प्रयोग कर प्राच्य मनोविज्ञान कहता है कि न केवल मानसिक संकल्प, विचार आदि से अपितु देह, इन्द्रिय, मन, बुद्धि, अहंकार आदि की सभी हलचलों से चेष्टाओं व्यापारों से संस्कारों की उत्पत्ति होती है। कर्म करते समय हमारा जितना मनोयोग होता है चित्त पर रेखाकंन भी उतना ही स्पष्ट होता है। हमारे समीप चाहे जो होता रहे किन्तु यदि हमारा ध्यान उधर नहीं गया है तो हमारे चित्त पर उसका कोई संस्कार नहीं पडता। चित्त पर पडे संस्कारों के भी दो रुप होते हैं। एक स्मृति रुप दूसरा कर्म रुप। स्मृति रुप संस्कार अध्ययन, ज्ञानार्जन, दृश्याकंन आदि से जन्म लेते हैं व चूंकि स्मृति की एक सीमा होती है, ये बहुधा नष्ट होते रहते हैं। बनते हैं, बिगडते हैं व पुनः जन्म लेते रहते हैं, कर्म रुप संस्कार वे हैं जिनमें हमारा कर्तावाला अंहकार जुडा होता है। ये हमारे अन्तःकरण के एक अंग बनकर जन्म-जन्मान्तरों तक हमारे साथ चलते हैं। अहंभाव से ग्रहीत संस्कार विस्मृति के गर्भ में जाकर भी कभी मिटते नहीं है। ये अन्तर्मन में, मन की गहरी परतों में संचित बने रहते हैं। इन्हीं को पाश्चात्य मनःविदों ने डिस्पोजिशन्स या एनग्रम्स कहा है। प्रख्यात मनोवैज्ञानिक कार्ल जुंग 'साइकॉलाजीकल टाइप्स' में लिखते हैं- "Sanskar is simply the result of habitual repettion of comman thought or behauiour pattern until it becomes deeply rooted in psyche."

अर्थात् अभ्यास पूर्वक सतत् दुहराये जाने वाले विचार व व्यवहार ही संस्कार बनकर मन की गहराइयों में जड़ जमा लेते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि प्राच्य मनोविज्ञान को काफी सीमा तक समझने का प्रयास जुंग ने किया था व समय-समय पर वह उनके चिन्तन में अभिव्यक्त भी हुआ।

सृष्टा द्वारा खेले जाने वाला संस्कारों का यह खेल निराला है। आत्मा अनादि काल से संसार चक्र में भ्रमण कर रही है। अनन्त जन्मों में विचरण कर चुकी है। हर बार चित्त पर संस्कार आरोपित हो जाते हैं। जब भी संस्कार क्रिया के रुप में व्यक्त होते हैं हम उसमें पुनः अहंभाव स्थापित कर लेते हैं तो फल यह होता है कि पूर्व के समान ही नवीन अंकेन पुनः हो जाता है। बस यही सिलसिला चलता रहता है। यदि कर्ता के अहंकार से रहित होकर कर्म किये जाएं तो एक बार क्रिया को अभिव्यक्ति के बाद वे पुनः जन्म नहीं लेते। इस प्रकार चित्त को एक गोदाम माना जा सकता है, जिसमें अच्छे बुरे सभी प्रकार के संस्कारों का संग्रह है। स्मृति पटल पर नवीनतम कर्ताभाव से किए गए अंकन बार-बार बनते रहते हैं। यदि श्रेष्ठ कर्म होगें, श्रेष्ठ का साथ होगा तो संस्कार भी श्रेष्ठ संग्रहित होते चले जाएगें। यह अवसर केवल मनुष्य को मिला है कि वह अपना चित्त रुपी जखीरा परिशोधित करना चाहे तो इस मानव जीवन का कर्म योनि का लाभ ले लें।

मात्र मनुष्य ही जो कर्मयोनि में जन्म लेता है, शेष सारी योनियां स्थावर वृक्ष से लेकर कीटक जीव-जन्तु तथा देवताओं से लेकर यक्ष किन्नर तक सभी भोग योनि में जन्म लेते हैं। यह धरा कर्मभूमि है। मनुष्य जन्म-जन्मान्तरों से चले आ रहे सषुप्त संस्कारों का कोष लेकर आता है। इन्हें संचित कर्म कहा जाता है। जो नवीन कर्म वह सम्पादित करता है, उन्हें क्रियमाण कहते हैं। वें संचित में सम्मलित होते चले जाते हैं। प्रारब्ध मनुष्य के अनुसार ही मिला है, ऐसी देव संस्कृति की मान्यता है। गीता के अध्याय आठ में योगीराज श्री कृष्ण कहते हैं कि मनुष्य जिन-जिन भावों का स्मरण करते हुए शरीर छोडता है, वही प्रारब्ध बन जाते हैं। कर्मयोनि व भोगयोनि का अर्थ इसलिए समझना जरुरी है। मनुष्य को यह जन्म इसलिए मिला है कि वह श्रेष्ठ कर्मों द्वारा प्रारब्ध काटकर अपने लिए नया मार्ग चुन लें। ....(शेष अगले अंक में)

कवि की कलम से

कोराना विषयक गीत : लौटो वेद की ओर

उल्टे रस्ते जाओगे जो, बनकर दैत्य वेश में।
इसी तरह आएंगी, महामारी सारे देश में।।
लौटो वेद की ओर, लौटो वेद की ओर।

रचियता : कवि प्रज्जवल आर्य
ग्राम : ताल्हापुर (सहारनपुर)

मछली, अंडा, मुर्गा, बकरा, चूहे, बिल्ली खाओगे।
इसी लिए तो कोरोना को, केवल तुम ही भाओगे।।
ऊर्जा मांस से कई गुना तुम, शाकाहार से पाओगे।
लघु भारी इन बीमारी से, सदा सदा बच जाओगे।।
खाओगे जो दाल, टमाटर, भर जाओ आवेश में।
इसी तरह आएंगी, महामारी सारे देश में......।।1।।

हवा के अंदर बुरे विषाणु, उड़ते विचरण करते हैं।
उन अनदेखे अरिदल से, हम रोगी होकर मरते हैं।।
हवन, भवन में पावन बू से, कोना कोना भरते हैं।
हवन की बू से बुरे विषाणु, थर थर थर थर डरते हैं।।
बचना है तो हवन करो, कहे राजा आदेश में।
इसी तरह आएंगी, महामारी सारे देश में......।।2।।

जैसा कर्म करेंगे भाई, ऐसा ही फल मिल जाये।
योग को निशदिन अपनाकर के, तेरा जीवन खिल जाये।।
ओ३म् जाप से संकट भारी, कर्मठता से झिल जाए।
कोरोना का कालगाल, सचेत सुईं से सिल जाए।।
प्रज्जवल तेरे सभी सगे हैं, रहे न सबसे द्वेष में।
इसी तरह आएंगी, महामारी सारे देश में......।।3।।

25वीं पुण्यतिथि पर समर्पित

हे प्रेमभिक्षु जी! तुम्हे प्रणाम!

रचियता : डा.अर्चना प्रिय आर्य

हे प्रेमभिक्षु जी! तुम्हें प्रणाम!

प्यार का दीपक जलाकर आपने,
प्रेम का सार बहाकर आपने।
छीन-दुखियों के मिटाये दुःख तमाम ।।1।।

ज्ञान की ज्योति जलाई आपने,
ढोंग की धज्जी उड़ाई आपने।
नाद वेदों का गुंजाया धूम-धाम।।2।।

वीर थे तुम, धीर थे तुम,
पर तपस्वी मौन थे तुम।
निरभिमानी, संयमी, तुम रहे निष्काम।।3।।

मधुर वाणी के धनी थे तुम सदा,
आशावादी दिव्य साधक थे सदा।
ले सकी न लेखनी थी अन्त तक विश्राम।।4।।

इस धरा पर आपने आकर अहा,
वैदिक धर्म के उत्थान हित सब कुछ सहा।
देशहित देखा नहीं था शीत-घाम।।5।।

आपने सींचा था वैदिक वाटिका को,
आपने जोड़ा था वैदिक भावना को।
नगर हो या हो कुटीरों का ही ग्राम।।6।।

ईश्वरीय 'प्रसाद' जाना संकटों को,
सह लिया धर धैर्य सारे झंझटों को।
पर छोड़ा नहीं ऋषि का जो काम।।7।।

आपने जो कार्य छोड़ा है अधूरा,
आओ मिलकर आज उसको करें पूरा।
''अर्चना'' में हो हमारा गान साम।।8।।

25 वीं पुण्यतिथि पर

मेरे दो साल – आचार्य प्रेमभिक्षु जी के साथ

लेखक : आचार्य सत्यप्रिय आर्य, संरक्षक : संस्कार जागृति मिशन

चलभाष : 09719601088

इस परिवर्तनशील संसार में कौन प्राणी है जो जन्म लेकर मृत्यु को प्राप्त नहीं होता, परन्तु जन्म लेना उसी का सार्थक है जिसके जन्म लेने से वंश, देश, जाति और धर्म की उन्नति होती है। वस्तुत व्यक्तित्व समाज की धरोहर है और समाज ही उसका निष्पक्ष मूल्यांकन करता है। समाज किसी की बापौती नहीं हो सकता। ईमानदारी और निष्पक्षता अपने मन की अनूभूति है, उन्हें किसी के प्रमाणपत्र की आवश्यकता नहीं होती। परम श्रद्धेय वैदिक विद्वान तथा अनेक ग्रामीण आर्यसमाजों के जनक और अनेक आन्दोलनों के नेता स्व0श्री आचार्य प्रेमभिक्षु जी आर्यसमाज के एक ऐसे देदीप्यमान नक्षत्र थे जिन्होंने विद्वता, सादगी, कर्मठता, निर्भीकता व अपनी तार्किक बुद्धि से समस्त आर्य जगत को चमत्कृत कर दिया था। वैदिक सिद्धातों की सच्चाई एवं राष्ट्रप्रेम की भावना उनके हृदय और मस्तिष्क में ही नहीं अपितु उनके रोम-रोम में रमी हुई थी। वे महर्षि दयानंद के कट्टर अनुयाई और आर्यसमाज के सिर्फ दीवाने ही नहीं बल्कि एक कर्तव्य परायण चौकीदार व सिपाई भी थे। उनका सम्पूर्ण जीवन गीता में वर्णित कर्मयोग ही है। ये दृढ़ इच्छा शक्ति के धनी थे। इनका सम्पूर्ण जीवन त्याग और तपस्या का जीवन था। उन्होंने आर्यसमाज की हर किस्म से सेवा की यानि कि सम्पूर्ण जीवन वाणी द्वारा वेद प्रचार किया साथ ही साथ लेखनी से 'सत्य प्रकाशन' द्वारा आर्य साहित्य के रूप में करीब छोटी-बड़ी 150 पुस्तकें लिखकर प्रकाशित कीं। राष्ट्र प्रेम की भावना भी उनमें कूट-कूट कर भरी थी। आचार्यश्री जब भी अपना भाषण विराम की ओर ले जाते थे तो वह ईश्वर से यह कामना अवश्य करते थे कि मेरा वृद्ध भारत पुन: विश्वगुरू के आसन पर आसीन हो। इनकी स्पष्ट मान्यता थी कि हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों, रूढ़ीवादी मिथ्या, आडम्बर ही देश की लम्बी पराधीनता का कारण है। उनकी वाणी में बड़ा ओज व आकर्षण था, जिससे सुनने वाले मंत्रमुग्ध हो जाते थे। वो शरीर से कुछ दुबले-पतेल होते हुए भी उनमें कार्य क्षमता बहुत अधिक थी। वो अपने स्वभाव व वेशभूषा से एक संत दिखाई देते थे।

मेरे गुरू स्व0आचार्य प्रेमभिक्षु जी वानप्रस्थ में एक और भारी विशेषता थी कि उन्होंने आर्य जगत को पत्र व्यवहार की श्रृंखला में आबद्ध कर रख था। मैंने दो वर्ष उनके सानिध्य में रहकर देखा था कि वो प्रतिदिन 20 पत्र अवश्य लिखते थे और पत्र भी पोस्टकार्ड पर बहुत बारीक शब्दों द्वारा एक लिफाफे के समाचार लिख दिया करते थे। आप पंचयज्ञों का निष्ठापूर्वक पालन करते थे। वेद वाक्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' को साकार रूप देने के लिए ही अपने ध्येय वाक्यों को यज्ञ की समाप्ति पर बुलवाते थे- 'व्यक्ति-व्यक्ति के आर्यकरण और परिवारों के वैदिकीकरण से ही आर्यसमाज उदय होगा, आर्यसमाज उदय से भारत उदय होगा, भारत उदय से ही विश्व उदय होकर देव दयानंद के दिव्य स्वप्न साकार होंगे' और उनके सार्वभौमिक उद्घोष वेद की ऋचा 'स्वयं पश्य' के अनुसार मान्यता पा गये। हम बदलेंगे-जग बदलेगा, हम सुधरेंगे-जग सुधरेगा, अवगुण त्यागें-सद्गुण धारें, वैदिक परिवार बनायेंगे-धरती पर स्वर्ग सजायेंगे, संसार के श्रेष्ठ पुरूषो एक हो। आर्यजनों में युगों-युगों तक गूंजते रहेंगे। अपने जीवन सफर में स्व0प्रेमभिक्षु जी द्वारा किये गये एक-एक कृत्य मानव जीवन को जीने का प्रभावी संदेश देता रहेगा।

स्व0आचार्य प्रेमभिक्षु जी की मेरे में बड़ी आत्मीयता थी, कारण वह मेरे परिवार में बहुत आते थे। क्योंकि मेरा परिवार भी आर्यसमाज के प्रति समर्पित है।... (शेष पेज 08 पर)

पेज 07 का शेष

मेरे दो साल – आचार्य प्रेमभिक्षु के साथ (लेखक : आचार्य सत्यप्रिय आर्य)

.....मेरे बाबा स्व0श्री भंवर सिंह आर्य जी सन् 1939 ई0 में निजामशाही के खिलाफ आर्यसमाज ने आन्दोलन किया तो वो 18 व्यक्तियों का जत्था लेकर हैदराबाद उस भीषण परिस्थिति में गये थे कि वहां से लौटने की कोई उम्मीद नहीं करता था। इसके बाद मेरे पिता स्व0 निर्भय सिंह आर्य जी सन् 1957 ई0 में हिन्दी रक्षा आन्दोलन में आर्यसमाज के नेतृत्व में तत्कालीन मुख्यमंत्री कैरों के खिलाफ ''अपनी भाषा अपना देश-आजादी का यह परिवेश'' को चरितार्थ करने के लिए 44 व्यक्तियों का जत्था लेकर अम्बाला जेल (पंजाब) में गये थे। इसके बाद मेरे पिता व माता दोनों गौरक्षा हेतु सन् 1967 ई0 में दिल्ली की तिहाड़ जेल में एक माह जेल काटी, जिसमें मैं स्वयं भी था, उस समय मेरी अवस्था मात्र 12 वर्ष थी। यानि आर्यसमाज के तीन बड़े आन्दोलनों में मेरा परिवार जेल में था। इस कारण आचार्य प्रेमभिक्षु जी का मेरे परिवार से आत्मीयता का रिश्ता था।

मुझे याद है सन् 1982 ई0 में अपने ही गांव ऊंचागांव (सादाबाद) में आर्यवीर दल को बनाया, जिसमें पचास नौजवानों ने जंगल में बैठकर शपथ ली कि हम सब मिलकर अपने गांव व क्षेत्र की बुराईयों को दूर करके ही रहेंगे और उसमें बहुत बड़ी सफलता भी हमें मिली- शराब, जुआ, चिलम आदि पर तो विशेष पाबन्दी लगा दी। इस संगठन की ख्याति को सुनकर स्व0आचार्य प्रेमभिक्षु जी मथुरा से चलकर हमारे गांव ऊंचागांव में पधारे और हम सभी नौजवानों को सम्बोधित किया और इतने उत्साहित कर दिये मानो वो सभी ऋषि के दीवाने हो गये और बहुत-बहुत धन्यवाद दिया। और वेदों के अनुसार ''चरैवेती-चरैवेती'' का स्मरण कराया। मैं कह सकता हूं कि स्व0प्रेमभिक्षु जी के उसी उद्बोधन को सुनकर मेरे संस्कारों में और पानी लग गया और मेरे मन में कुछ करने की लालसा और बढ़ गई। मैंने इसी बीच अपनी पढ़ाई को पूरा किया था और सरकारी नौकरी की तैयारी में था। परन्तु विचारों ने पल्टा खाया और प्रेमभिक्षु जी ने वेद मंदिर, मथुरा पर एक बहुत बडा लक्ष्य लेकर ऋषि दयानंद सरस्वती के स्वप्नों को साकार करने के उद्देश्य से एक ''वैदिक मिशनरी'' के रूप में स्नातक नौजवानों का संगठन खड़ा किया। मैंने उसी साल एम0ए0 की परीक्षा पूर्ण की थी कि स्व0आचार्य प्रेमभिक्षु जी की सूचना मेरे पास पहुंची और मैं बड़ी निष्ठा के साथ उस टीम का सिपाही बना। मेरे साथ उस टीम में करीब 20 विद्यार्थी थे। हमारा पूरा खर्चा आश्रम की ओर से होता था, जिसमें अनेक आचार्यों द्वारा हमें वेद, कुरान, बाइबिल, दर्शन, आयुर्वेद आदि की शिक्षा दी जाती थी। इसी क्रम में मेरे दो साल मेरे गुरू आचार्य प्रेमभिक्षु जी के साथ बीते।

आज 36 वर्ष बाद जब उस समय को याद करता हूं तो प्रेमभिक्षु जी मेरे सामने साकार रूप में खड़े दिखाई देते हैं, लगता है छोटा सा कद, पीत वस्त्रों से सुशोभित, हाथ में एक साधारण सा थैला लेकर आश्रम पर आ रहे हैं। शाम के समय वह हमारी रोजना कक्षा लेते थे। गोल चक्र में बैठा लेते थे और सबके मध्य में स्वयं बैठते थे। उस समय का एक संस्मरण मुझे बहुत याद आता है- शाम का समय था, हम करीब 14 विद्यार्थी गोलचक्र में बैठे थे, आचार्य प्रेमभिक्षु जी ने सारे दिन का पाठ सुन लिया तो हम सबसे एक प्रश्न किया कि यह बताओ कि तुम्हे आर्य समाज क्यों प्रिय लगता है? बारी-बारी से सभी को पूछ रहे थे और अपनी-अपनी योग्यता के आधार पर हम सभी उत्तर दे रहे थे। हमारा एक साथी हुआ करता था उदयवीर निवासी दघैंटा, मथुरा, जब उसकी बारी आयी तो उसने कहा गुरू जी आर्यसमाज मुझे इसलिए प्रिय लगता है कि घर पर तो हमें सूखी चटनी से रोटी मिलती है और आर्यसमाज के उत्सवों में जाते हैं तो वहां पूड़ी, दो सब्जी, बूंदी आदि मिलती है, इस कारण मुझे आर्यसमाज प्रिय है। इस उत्तर को सुनकर आचार्य प्रेमभिक्षु जी सहित सभी साथी हंसी से लोटक-पीटक हो गये और यह कहावत प्रसिद्धि पा गयी। आचार्य जी दिन में एक बार जरूर इस बात को कहलवाकर हंसते थे।

संसार का चक्र ऐसा गतिमान और भूल भुलैयों का है, जिसमें बहुत थोड़े लोग ही यह सोचने का यत्न करते हैं कि हमारे ऊपर किस व्यक्ति का कितना उपकार और ऋण है। शान्ति के क्षणों में आचार्य प्रेमभिक्षु जी के विषय में सोचने का प्रयास करता हूं तो देखता हूं कि परम श्रद्धेय आचार्य प्रेमभिक्षु जी.............. (शेष पेज 09 पर)

पेज 08 का शेष

मेरे दो साल – आचार्य प्रेमभिक्षु के साथ (लेखक : आचार्य सत्यप्रिय आर्य)

.....जिन्होंने सन् 1942 ई0 से लेकर सन् 1995 ई0 तक करीब 52 वर्षों में आर्यसमाज की संक्रांति यज्ञ के रूप में जो ज्वाला प्रज्ज्वलित की वह एक अनूठी मिशाल है। जिन्होंने एक उच्चकोटि के उपदेशक के रूप में एक कुशल लेखक के रूप में, एक आदर्श गृहस्थी के रूप में, एक आदर्श आचार्य के रूप में ''गांवों की ओर चलो'' की आधार भित्ति पर ''चरित्र निर्माण आन्दोलन'' के रूप में जन-जन और घर-घर तक महर्षि दयानंद के पुनीत सन्देश को पहुंचा सकने वाली एक संगठित और सफल योजना तैयार की थी, जिसे आर्य जगत में कभी भुलाया नहीं जा सकता।

स्व0प्रेमभिक्षु जी के कर्मठ एवं सुयोग्य पुत्र श्री अशोक आर्य एक योग्य पिता की योग्य संतान बनकर आर्य परम्पराओं का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। उनकी उदयपुर में नवलखा महल सेवा ऋषि भक्ति का प्रमाण है।

अन्त समय में स्व0आचार्य प्रेमभिक्षु जी के मन में एक तड़फ थी कि मैंने जो संक्रांति यज्ञ अपने जीवन की सम्पूर्ण हवि देकर प्रारम्भ किया है वह निरंतर आगे बढ़ता रहे, इसके लिए कोई योग्य उत्तराधिकारी मिले। ईशकृपा से उनकी भावनानुसार उन्हें एक शिष्य के रूप में आचार्य स्वदेश जी महाराज मिल गये, जो मेरे भी लंगोटीबंद मित्र होते हैं। हम दोनों का साथ वैदिक मिशनरी के रूप में आचार्य प्रेमभिक्षु जी द्वारा चलाये जा रहे संक्रांति यज्ञ में मेरे दो साल में हुआ था, यह प्रथम मिलन था। मुझे अपार हर्ष है कि स्व0प्रेमभिक्षु जी का उत्तराधिकार आर्य जगत के विद्वान, लेखक, कवि आचार्य स्वदेश जी ने संभाल लिया। आचार्य स्वदेश जी का जीवन भी पुरूषार्थ और संघर्षों का ऐसा पुनीत ग्रंथ है, जिसमें अनुभवों, नीतियों, सफलताओं तथा मानवसेवा के अनेक प्रेरणास्पद अध्याय हैं। जो मानव कल्याण की दृष्टि से हम सबके लिए अध्ययन की मूल्यवान सामग्री प्रस्तुत कर रहे हैं। आज से करीब 36 वर्ष पूर्व हम दोनों रात्रि में वेद मंदिर में बैठकर जो योजना बनाया करते थे, जो स्वप्न देखा करते थे आज वही स्वप्न व योजना वेद मंदिर पर साकार दिखाई दे रही है। मैं पूर्ण आत्मविश्वास के साथ कह रहा हूं कि स्व0आचार्य प्रेमभिक्षु जी ने एक छोटी सी चिंगारी का रूप जिसे दिया था, उसे आचार्य स्वदेश जी महाराज ने एक दावानल के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत कर दिखाया है। उदाहरण के तौर पर-व्यक्तिगत रूप में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन की भव्यता तथा सफलता, गुरूकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन का कायाकल्प, आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. लखनऊ का सभा प्रधान बनना, सोलह वर्ष से प्रतिवर्ष चारों वेदों का यज्ञ सम्पन्न कराना, वेद मंदिर परिसर में भव्य यज्ञशाला, गौशाला, अतिथिशाला, सत्य प्रकाशन भवन का निर्माण कराना, तपोभूमि मासिक पत्रिका का कलेवर आकर्षित करना, आर्यवीर दल के शिवरों पर विशेष ध्यान, ऋषिकृत सत्यार्थ प्रकाश का वितरण कराना तथा अपने गुरूकुल वृंदावन से वेदपाठी, भजनोपदेशक व पुरोहित तैयार करना।

मैं अन्त में निष्कर्षतः कह सकता हूं कि इस परिवर्तनशील संसार में स्व0 आचार्य प्रेमभिक्षु जी ने अपने अप्रतिम एवं महती प्रयास द्वारा जीवन की सार्थकता प्रमाणित कर दी है। मैं ऐसे प्रज्ञा पुरूष को शत्-शत् नमन करता हूं।

जन-जन का विश्वास हो गये, धरती से आकाश हो गये।
शत्-शत् नमन तुम्हें करता हूं, तुम स्वर्णिम इतिहास हो गये।।

विश्व पुस्तक दिवस पर

''पुस्तकों का हमारे जीवन में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। अच्छी पुस्तकें न केवल ज्ञान का भण्डार होती हैं, अपितु एक अच्छी दोस्त भी होती हैं। मुझे जब भी समय मिलता है अवश्य ही स्वाध्याय करता हूं, आप भी समय निकाल कर प्रतिदिन अवश्य स्वाध्याय करने की एक अच्छी आदत डालें।'' – आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी (संरक्षक : संस्कार जागृति मिशन)

प्रेरक प्रसंग
कठिन परिस्थितियों में रोना नहीं चाहिए

वंदना प्रिय आर्य
एम.ए., एम.फिल. (संस्कृत)
उपाध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

एक दिन की बात है एक चिड़िया आकाश में अपनी उड़ान भर रही होती है। रास्ते में उसे गरुड़ मिल जाता है। गरुड़ उस चिड़िया को खाने को दौड़ता है। चिड़िया उससे अपनी जान की भीख मांगती है। लेकिन गरुड़ उस पर रहम करने को तैयार नहीं होता। तब चिड़िया उसे बताती है कि मेरे छोटे-छोटे बच्चे हैं और उनके लालन - पालन के लिए मेरा जीवित रहना जरूरी है। तब गरुड़ इस पर चिड़िया के सामने एक शर्त रखता है कि मेरे साथ दौड़ लगाओ और अगर तुमने मुझे हरा दिया तो मैं तुम्हारी जान बख्श दूंगा और तुम्हें यहां से जाने दूंगा। गरुड़ इस बात को जानता था कि चिड़िया का उसे दौड़ में हराना असंभव है। इसलिए उसके सामने इतनी कठिन शर्त रख देता है। चिड़िया के पास इस दौड़ के लिए हां करने के अलावा और कोई विकल्प नहीं बचता। लेकिन चिड़िया को इस बात का अंदाजा था कि गरुड़ को दौड़ में हराना नामुमकिन है लेकिन फिर बी वह इस दौड़ के लिए हां कर देती है। पर वह गरुड़ से कहती है कि जब तक ये दौड़ खत्म नहीं होता वह उसे नहीं मरेगा। गरुड़ इस बात पर राजी हो जाता है। दौड़ शुरू होती है चिड़िया फट से जाकर गरुड़ के सिर पर बैठ जाती है और जैसे ही गरुड़ दौड़ के आखिरी स्थान पर पहुंचता है चिड़िया फट से उड़ कर लाइन के पार पहुंच जाती है और जीत जाती है। गरुड़ उसकी चतुरता से प्रसन्न हो जाता है और उसको जिंदा छोड़ देता है। चिड़िया तुरंत ही वहां से उड़ जाती है और अपने रास्ते चल देती है।

इस प्रंसग से हमें सीख मिलती है कि कठिन परिस्थितियों में हालातों पर रोना नहीं चाहिए बल्कि समझदारी और चतुरता के साथ मुसीबत का सामना करना चाहिए। विरोधी या कार्य आपकी क्षमता से ज्यादा मजबूत हो तो इसका मतलब यह नहीं कि आप पहले से ही हार मान कर बैठ जाएं बल्कि समझदारी और धैर्य से बैठ कर समस्या का समाधान ढूढ़ना चाहिए। अपने ऊपर विश्वास रखना चाहिए कि हम किसी भी हालत में जीत सकते है ।

विश्व पुस्तक दिवस पर

''पुस्तक एक ऐसा शिक्षक है, जो बिना कष्ट, बिना आलोचना और बिना परीक्षा हमें जिन्दगी को सफल बनाने की शिक्षा प्रदान करती है और एक सच्चे मित्र की तरह मुसीबतों से निकलने का मार्ग दिखाती है। इसलिए हमें अच्छी पुस्तकों को स्वाध्याय प्रतिदिन अवश्य करना चाहिए।'' – डा.अर्चना प्रिय आर्य जी (अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन)

ओजस्वी प्रवक्ता एवं मधुर गायिका
श्रद्धेया डा.अर्चना प्रिय आर्य जी
(अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन)
की अमृतमयी वाणी में
मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम कथा, भगवती सीता चरित
यज्ञ कथा, राष्ट्र कथा एवं आर्य भजनोपदेश
कराने के लिए सम्पर्क करें : 09719910557, 09719601088

कोरोना वायरस | आज ही उठायें ये दस कदम

नीति प्रिय आर्य

रोग प्रतिरोधक क्षमता हमें कई बीमारियों से सुरक्षित रखती है। छोटी-मोटी ऐसी कई बीमारियां होती हैं जिनसे हमारा शरीर खुद ही निपट लेता है। रोग प्रतिरोधक क्षमता के कमजोर होने पर बीमारियों का असर जल्दी होता है। ऐसे में शरीर कमजोर हो जाता है और हम जल्दी-जल्दी बीमार पड़ने लगते हैं। रोग प्रतिरोधक क्षमता के कमजोर होने के कई कारण हो सकते हैं। कई बार ये खानपान की लापरवाही की वजह से होता है, कई बार नशा करने की गलत आदतों के चलते और कई बार यह जन्मजात कमजोरी की वजह से भी होता है। अब सवाल ये उठता है कि अगर इम्यून पावर कमजोर हो जाए तो उसे बढ़ाने के लिए क्या उपाय किए जाने चाहिए? यहां ऐसे ही कुछ उपायों का जिक्र है जिन्हें आजमाकर आप एक सप्ताह के भीतर अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ा सकते हैं। आइये जानते हैं रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्युनिटी पावर) बढ़ाने के उपाय-

इम्युनिटी बढ़ाने के 10 उपाय :-

1. दिनभर समय-समय पर गर्म पानी पीते रहें। पानी को हल्का गर्म करके पिएं।
2. रोजाना कम से कम 30 मिनट तक योग करें।
3. अपने आहार में हल्दी, जीरा, धनिया और लहसुन जैसे मसालों का इस्तेमाल जरूर करें।
4. एक चम्मच या 10 ग्राम च्यवनप्राश का सेवन रोज सुबह करें। डायबिटीज के रोगी शुगर फ्री च्यवनप्राश का सेवन करें।
5. दिन में एक या दो बार हर्बल चाय (काढ़ा) पीएं। काढ़ा बनाने के लिए पानी में तुलसी, दालचीनी, काली मिर्च, सूखी अदरक, मुनक्का मिलाकर अच्छी तरह धीमी आंच पर उबालें। अगर मीठा लेना हो तो स्वादानुसार गुड़ डालें या खट्टा लेना हो तो नींबू का रस मिला लें।
6. दिन में कम से कम एक या दो बार हल्दी वाला दूध लें। 150 मिली लीटर गर्म दूध में करीब आधी छोटी चम्मच हल्दी मिलाकर पीएं।
7. तिल का तेल या नारियल का तेल या घी रोज सुबह और शाम नाक के दोनों छिद्रों में लगाएं।
8. एक बड़ी चम्मच तिल का तेल या नारियल का तेल मुंह में लें। इसे पीना नहीं है. इसे दो से तीन मिनट तक मुंह में घुमाने के बाद थूक दें। इसके बाद गुनगुने पानी से कुल्ला करें। दिन में एक या दो बार ऐसा किया जा सकत है।
9. गले में खरास या सूखा कफ होने पर पुदीने की कुछ पत्तियां और अजवाइन को पानी में गर्म करके स्टीम लें।
10. गुड़ या शहद के साथ लॉन्ग का पाउडर मिलाकर इसे दिन में दो तीन बार खाएं। सूखा कफ या गले में खरास ज्यादा दिनों तक है तो डॉक्टर को दिखाएं।

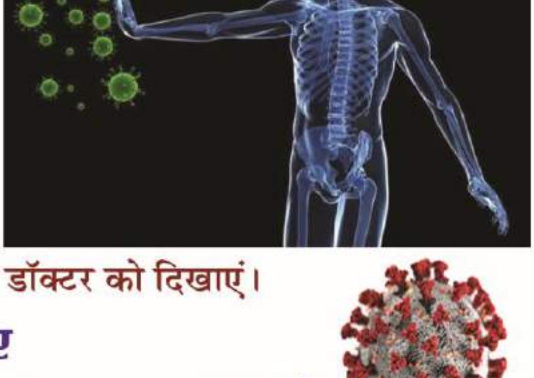

कोरोना से बचने के लिए

रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्युनिटी पावर) को कम न होने दें।

(हालांकि ये सभी घरेलू उपचार हैं फिर भी डॉक्टर से परामर्श ले लेना बेहतर होगा)

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

जाट जन चेतना महासभा, मथुरा द्वारा आयोजित हवन व होली मिलन समारोह को सम्बोधित करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी। बहिन जी का माल्यार्पण स्वागत करते आयोजक।

जाट जन चेतना महासभा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी, भारती केसरी देवेन्द्र पहलवान, मिशन के प्रचारक चौ.लाल सिंह आर्य जी, आयोजक देशराज सिंह व अन्य अतिथिगण।

जाट जन चेतना महासभा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मंचस्थ संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी व अन्य अतिथिगण।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

कोराना संक्रमण (कोविड-19) महामारी के आपातकाल के दौरान लॉकडाउन से प्रभावित गरीब, मजदूर व जरूरतमंदों को खाद्य सामग्री वितरण करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी।

वैश्विक महामारी 'कोरोना' के आपातकाल के दौरान जरूरतंदों को चावल, आटा, साबुन व पूजा सामग्री वितरण करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी व मिशन के सदस्य।

वैश्विक महामारी 'कोरोना' के आपातकाल के दौरान जरूरतंदों को राशन की सामग्री वितरण व बचाव के लिए जागरूक करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

श्रीराम नवमीं के पावन पर्व पर संस्कार जागृति मिशन के ऊंचागांव व मथुरा स्थित कार्यलयों पर यज्ञ करते संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी, अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी व सदस्यगण।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के आह्वान पर कोविड-19 महामारी के खिलाफ 5 अप्रैल को अपने-अपने घरों पर दीप जलाते अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी, संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी, सरोज रानी आर्य जी व उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य जी।

महामानव आर्यवीर हनुमान जी की जयंती पर यज्ञ करते मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी, संरक्षक सत्यप्रिय आर्य जी व अन्य।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां मीडिया की नजरों में

पंजाब केसरी 11 अप्रैल, 2020, शनिवार

लोगों को बांटी खाद्य सामग्री

मथुरा, (पंजाब केसरी): संस्कार जागृति मिशन द्वारा शुक्रवार को भी रिफाइनरी नगर क्षेत्र में जरूरतमंदों के बीच खाद्य सामग्री का वितरण किया गया। इस दौरान सदस्यों द्वारा निःशुल्क चावल, आटा, बिस्कुट, साबुन आदि के पैकेट दिए गए। मिशन की अध्यक्ष डॉ.अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि मिशन की कोशिश है कि इस आपदा के दौर में कोई भी भूखा न सोये। हमारे यहाँ नर सेवा को ही नारायण सेवा कहा गया है। यह समय आगे आकर सेवा करने का है। उन्होंने समाजसेवी संस्थाओं व लोगो से जरूरतमंदों की सहायता के लिए अपील भी की। इस दौरान उन्होंने कोरोना से बचने के लिए जागरूक भी किया और घरों में रहने और हाथों को साफ रखने के लिए कहा। उन्होंने बताया की मिशन का यह सेवा कार्य जारी है और आगे भी चलता रहेगा। सामग्री वितरण में दीपक सारस्वत, कपिल प्रताप आदि का सहयोग रहा।

9 अप्रैल, 2020 | गुरुवार | **पंजाब केसरी** DELHI

जरूरतमंदों को बांटी खाद्य सामग्री

मथुरा, (पंजाब केसरी): विश्व व्यापी कोरना संक्रमण महामारी के आपातकाल को लेकर लॉकडाउन से प्रभावित गरीब असहाय जरूरतमंदों को संस्कार जागृति मिशन की टीम द्वारा निःशुल्क खाद्य सामग्री वितरित की गयी और कोरोना से बचाव के लिए बार-बार साबुन से हाथ साफ करने, घर में ही रहने तथा सोशल डिस्टेंस के लिए जागरूक किया गया। इस दौरान मिशन द्वारा साबुन भी दिए गए। मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने बताया कि मिशन द्वारा टाउनशिप क्षेत्र में जरूरतमंदों को निःशुल्क खाद्य सामग्री का वितरण किया गया है। आगे भी यह सेवा निरंतर मिशन की ओर से सभी कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों द्वारा चलती रहेगी। उन्होंने बताया कि सामग्री वितरण में प्रशासन द्वारा दिये गए सभी निर्देशों का पालन किया जा रहा है एवं सामाजिक दूरी का विशेष ध्यान रखा जा रहा है। इस मौके पर दीपक सारस्वत, डॉ.कपिल प्रताप सिंह आदि का विशेष योगदान रहा।

छोटीसीबात मथुरा | 8 अप्रैल 2020

कोरोना से लड़ाई — मदद को आगे बढ रहे हाथ

खाद्य सामग्री का वितरण

मथुरा (छोटी सी बात)। विश्व व्यापी कोरना संक्रमण महामारी के आपातकाल को लेकर लॉकडाउन से प्रभावित गरीब असहाय जरूरतमंदों को संस्कार जागृति मिशन की टीम द्वारा निशुल्क खाद्य सामग्री वितरित की गयी और कोरोना से बचाव के लिए बार-बार साबुन से हाथ साफ करने, घर में ही रहने तथा सोशल डिस्टेंस के लिए जागरूक किया गया। इस दौरान मिशन द्वारा साबुन भी दिए गए। मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने बताया कि मिशन द्वारा टाउनशिप क्षेत्र में जरूरतमंदों को निःशुल्क खाद्य सामग्री का वितरण किया गया है। आगे भी यह सेवा निरंतर मिशन की ओर से सभी कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों द्वारा चलती रहेगी। इस मौके पर दीपक सारस्वत, डॉ.कपिल प्रताप सिंह आदि मौजूद थे।

हिन्दुस्तान • शुक्रवार • 03 अप्रैल 2020 •

यज्ञ कर मनाया श्रीराम जन्मोत्सव

मथुरा। संस्कार जागृति मिशन द्वारा ताराधाम कॉलोनी व ऊंचागांव स्थित कार्यालयों पर पदाधिकारियों द्वारा हवन कर भगवान श्रीराम का जन्मोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर मिशन की अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि भगवान श्रीराम का जन्म यज्ञ से ही हुआ था और यज्ञ की रक्षा के लिए ही उन्होंने सर्वप्रथम धनुषबाण उठाये थे। भगवान राम प्रतिदिन यज्ञ करने वाले प्रतापी राजा थे। आज उनके जन्मदिन पर हमें भी यज्ञ करने का संकल्प लेना चाहिये और असुरों के नाश तथा धर्मात्माओं की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि भगवान श्रीराम का जीवन मर्यादा युक्त था, इसलिए व मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाये। इस दौरान उनके जीवन को अपने जीवन में उतारने की आवश्यकता है। सचिव विवेक प्रिय आर्य, कपिल प्रताप सिंह, सरोज रानी आर्य आदि मौजूद रहे।

आज आगरा, 03 अप्रैल 2020

यज्ञ कर मनाया श्रीराम जन्मोत्सव

मथुरा। संस्कार जागृति मिशन द्वारा ताराधाम कॉलोनी व ऊंचागांव स्थित कार्यालयों पर पदाधिकारियों द्वारा हवन कर भगवान श्रीराम का जन्मोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर मिशन की अध्यक्षा डा. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि भगवान श्रीराम का जन्म यज्ञ से ही हुआ था और यज्ञ की रक्षा के लिए ही उन्होंने सर्वप्रथम धनुषबाण उठाये थे। भगवान राम प्रतिदिन यज्ञ करने वाले प्रतापी राजा थे। आज उनके जन्मदिन पर हमें भी यज्ञ करने का संकल्प लेना चाहिये और असुरों के नाश तथा धर्मात्माओं की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि भगवान श्रीराम का जीवन मर्यादा युक्त था, इसलिए व मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाये। वे सच्चे मातृ पितृ भक्त व गुरु भक्त थे। भ्रातृ प्रेम की उन्होंने अनूठी मिशाल कायम की। इसलिए आज लगभग साढ़े नौ लाख वर्ष बाद भी सभी के हृदयों में बसे हैं। आज परिवारों के टूटते हुए दौर में भगवान श्री राम से प्रेरणा लेकर उनके द्वारा जो जीवन जिया गया, उसे अपने में उतारने की आवश्यकता है। सचिव विवेक प्रिय आर्य, कपिल प्रताप सिंह, सरोज रानी आर्य आदि मौजूद रहे।

छोटीसीबात 10 अप्रैल 2020

कोरोना से लड़ाई — मदद को आगे बढ रहे हाथ

जरूरतमंदों की सेवा करने का समय

मथुरा (छोटी सी बात)। संस्कार जागृति मिशन द्वारा रिफाइनरी नगर क्षेत्र में जरूरतमंदों के बीच खाद्य सामग्री का वितरण किया गया। इस दौरान चावल, आटा, बिस्कुट, साबुन आदि के पैकेट दिए गए। मिशन की अध्यक्ष डॉ.अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि मिशन की कोशिश है कि इस आपदा के दौर में कोई भी भूखा न सोवे। हमारे यहाँ नर सेवा को ही नारायण सेवा कहा गया है। यह समय आगे आकर सेवा करने का है।

अमर उजाला आगरा | शुक्रवार, 3 अप्रैल 2020

यज्ञ कर मनाया श्रीराम जन्मोत्सवः संस्कार जागृति मिशन द्वारा ताराधाम कॉलोनी व ऊंचागांव स्थित कार्यालयों पर पदाधिकारियों द्वारा हवन कर भगवान श्रीराम का जन्मोत्सव मनाया गया। मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि भगवान श्रीराम का जन्म यज्ञ से ही हुआ था और यज्ञ की रक्षा के लिए ही उन्होंने सर्वप्रथम धनुषबाण उठाए थे। भगवान राम प्रतिदिन यज्ञ करने वाले प्रतापी राजा थे। संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि भगवान श्रीराम का जीवन मर्यादा युक्त था, इसलिए व मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए। इस मौके पर सचिव विवेक प्रिय आर्य, कपिल प्रताप सिंह आदि मौजूद रहे।

अमर उजाला आगरा | शुक्रवार, 10 अप्रैल 2020

हनुमान जयंती पर हुए धार्मिक अनुष्ठान

मथुरा। हनुमान जयंती के अवसर पर धार्मिक आयोजन हुए। श्री दीर्घ विष्णु मंदिर में विराजमान संकट मोचन दीर्घ हनुमान महाराज का विशेष पूजन अर्चन किया गया। सेवायत परिवार द्वारा पूर्ण वैदिक परंपरा के अनुसार पंचामृत अभिषेक, पूजन अर्चन किया गया। सेवायत महंत कांतानाथ चतुर्वेदी, बालकृष्ण चतुर्वेदी, लालकृष्ण चतुर्वेदी, पार्षद रामदास चतुर्वेदी थे। प्राचीन ठाकुर केशवदेव मंदिर स्थित दक्षिण मुखी हनुमान मंदिर में गोस्वामी ब्रजकिशोर शर्मा टीटू, श्यामाचरण गोस्वामी के नेतृत्व में हनुमान जी का अभिषेक वेद मंत्रों के बीच संपन्न हुआ। मंदिर कमेटी अध्यक्ष पंडित सुंदरलाल शर्मा एडवोकेट, नारायण प्रसाद शर्मा द्वारा सुंदरकांड का पाठ किया। संस्कार जागृति मिशन के ताराधाम कॉलोनी व ऊंचागांव स्थित कार्यालय पर हनुमान जयंती मनाई गई। विधि विधान से हवन यज्ञ किया गया। मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य, आचार्य सत्यप्रिय आर्य, विवेक प्रिय आर्य, डॉ. सरोज रानी आर्य आदि मौजूद रहे। संवाद

छोटीसीबात 09 अप्रैल 2020

हवन कर मनाई हनुमान जयंती

मथुरा (छोटी सी बात)। संस्कार जागृति मिशन के ताराधाम कॉलोनी व ऊंचागांव स्थित कार्यालय पर बुधवार को हनुमान जयंती मनाई गई। इस दौरान वैदिक विधि विधान से हवन यज्ञ किया गया और महावीर हनुमान जी जैसा बल, बुद्धि, ज्ञान, विवेक अपने अंदर धारण करने का संकल्प दिलाया गया। मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि वह वेदों के प्रकांड विद्वान थे। हनुमानजी संघर्ष करते हुए अपने लक्ष्य पर पहुंचते थे। संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि हनुमान जी के अंदर कभी भी कोई पद या राज्य लेने की आकांक्षा नहीं रही। वह सदैव सेवा में लगे रहते थे। वह एक कुशल राजदूत, एक कुशल गुप्तचर, एक कुशल योद्धा थे। उनका उज्जवल व धवल चरित्र हम सब के लिए प्रेरणादायक है। इस दौरान मिशन सचिव विवेक प्रिय आर्य, डॉ. सरोज रानी आर्य आदि मौजूद रहे।

हिन्दुस्तान आगरा • शुक्रवार • 10 अप्रैल 2020 •

संस्कार जागृति मिशन ने मनाई हनुमान जयंती

मथुरा। संस्कार जागृति मिशन ने ताराधाम कॉलोनी व ऊंचागांव स्थित कार्यालय पर हनुमान जयंती मनाई। इस दौरान हवन किया और हनुमान जी जैसा बल, बुद्धि, विद्या, विवेक धारण करने का संकल्प लिया।

8 अप्रैल 2020 **ब्रज गरिमा**

खाद्य सामग्री का वितरण

मथुरा, विश्व व्यापी कोरना संक्रमण महामारी के आपातकाल को लेकर लॉक डाउन से प्रभावित गरीब असहाय जरूरतमंदों को संस्कार जागृति मिशन की टीम द्वारा निःशुल्क खाद्य सामग्री वितरित की गयी और कोरोना से बचाव के लिए बार-बार साबुन से हाथ साफ करने, घर में ही रहने तथा सोशल डिस्टेंस के लिए जागरूक किया गया। इस दौरान मिशन द्वारा साबुन भी दिए गए। मिशन की अध्यक्षा डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि मिशन द्वारा टाउनशिप क्षेत्र में जरूरतमंदों को निःशुल्क खाद्य सामग्री का वितरण किया गया है। आगे भी यह सेवा निरंतर मिशन की ओर से सभी कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों द्वारा चलती रहेगी। उन्होंने कहा कि सामग्री वितरण में प्रशासन द्वारा दिये गए सभी निर्देशों का पालन किया जा रहा है एवं सामाजिक दूरी का विशेष ध्यान रखा जा रहा है। इस मौके पर दीपक सारस्वत, डॉ. कपिल प्रताप सिंह आदि का विशेष योगदान रहा।

10 अप्रैल 2020 **राजपथ मथुरा**

संस्कार जागृति मिशन का सेवा कार्य निरंतर जारी

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। संस्कार जागृति मिशन द्वारा शुक्रवार को भी रिफाइनरी नगर क्षेत्र में जरूरतमंदों के बीच खाद्य सामग्री का वितरण किया गया। इस दौरान सदस्यों द्वारा निःशुल्क चावल, आटा, बिस्कुट, साबुन आदि के पैकेट दिए गए। मिशन यह समय आगे आकर सेवा करने का है। उन्होंने समाजसेवी संस्थाओं व लोगो से जरूरतमंदों की सहायता के लिए अपील भी की। इस दौरान उन्होंने कोरोना से बचने के लिए जागरूक भी किया और घरों में रहने और हाथों को साफरखने के लिए कहा। उन्होंने

09 अप्रैल 2020 **राजपथ मथुरा**

संस्कार जागृति मिशन ने हवन कर मनाई हनुमान जयंती

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। संस्कार जागृति मिशन के ताराधाम कॉलोनी व ऊँचागाँव स्थित कार्यालय पर बुधवार को हनुमान जयंती मनाई गई। इस दौरान वैदिक विधि विधान से हवन यज्ञ किया गया और महावीर हनुमान जी जैसा बलए बुद्धिए ज्ञानए विवेक अपने अंदर धारण करने का संकल्प दिलाया गया। मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि वह वेदों के प्रकांड विद्वान थे। हनुमान जी संघर्ष करते हुए अपने लक्ष्य पर पहुंचते थे। संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि हनुमान जी के अंदर कभी भी कोई पद या राज्य लेने की आकांक्षा नहीं रही। वह सदैव सेवा में लगे रहते थे। वह एक कुशल राजदूत, एक कुशल गुप्तचर, एक कुशल योद्धा थे। इस दौरान मिशन सचिव विवेक प्रिय आर्य, डॉ. सरोज रानी आर्य आदि मौजूद रहे।

आज आगरा, 10 अप्रैल 2020

संस्कार जागृति मिशन ने हवन कर मनाई हनुमान जयंती

मथुरा। संस्कार जागृति मिशन के ताराधाम कॉलोनी व ऊँचागाँव स्थित कार्यालय पर बुधवार को हनुमान जयंती मनाई गई। इस दौरान वैदिक विधि विधान से हवन यज्ञ किया गया और महाव. ीर हनुमान जी जैसा बल, बुद्धि, ज्ञान, विवेक अपने अंदर धारण करने का संकल्प दिलाया गया। मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि वह वेदों के प्रकांड विद्वान थे। हनुमान जी संघर्ष करते हुए अपने लक्ष्य पर पहुंचते थे। संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि हनुमान जी के अंदर कभी भी कोई पद या राज्य लेने की आकांक्षा नहीं रही। वह सदैव सेवा में लगे रहते थे। वह एक कुशल राजदूत, एक कुशल गुप्तचर, एक कुशल योद्धा थे। उनका उज्जवल व धवल चरित्र हम सब के लिए प्रेरणादायक है। इस दौरान मिशन सचिव विवेक प्रिय आर्य, डॉ. सरोज रानी आर्य आदि मौजूद रहे।

Sanskar Jagrati TV
धार्मिक खबर, भजन, प्रवचन, योग, संस्कार समागम
तथा संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां
देखने को YouTube पर संस्कार जागृति टीवी चेनल को सबस्क्राइब करें।
Sanskar Jagrati TV